शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १९ : अंक ७ : नई दिल्ली : १९-२५ मई २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ३७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४१, सर्व ७८, का वाव से जोधपुर की ओर विहार हो गया है। वाव में अक्षयतृतीया का पावन कार्यक्रम श्रद्धा-भक्ति और उल्लास के साथ सानंद संपन्न हो गया। इस पुनीत अवसर पर १९१ तपस्वी भाई-बहनों ने पूज्यप्रवर को इक्षुरस का दान देकर वर्षीतप का पारणा किया।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण वाव में

भाभर में करुणाकर का भव्य स्वागत

७ मई। लगातार बढ़ती जा रही गर्मी के बीच लगभग १३.०५ किमी. का विहार कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर बनासकांठा जिले के तहसील क्षेत्र भाभर पधारे। गांव में प्रवेश के साथ पूज्यवर ने स्थानीय श्रद्धालुओं के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। उसके पश्चात् भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर आदर्श उच्च माध्यमिक शाला में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों एवं निराली मोदी ने पृथक्-पृथक् स्वागत गीत का संगान किया। श्री रजनीभाई मोदी, श्री प्रतीक परिख, श्री रमेशभाई रोलिया, श्री अशोकभाई संघवी, श्री पोपटलाल परिख एवं श्री आनंदभाई मोदी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। समणी निर्मलप्रज्ञाजी का वक्तव्य हुआ। अपनी जन्मभूमि पर अपने गुरु के मंगल पदार्पण पर मुनि गिरीशकुमारजी द्वारा प्रेषित लिखित भावों को मुनि अक्षयप्रकाशजी ने प्रस्तुत किया। दो नन्हीं बालिकाओं ने अपने बालसुलभ भावों को प्रस्तुत किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'भाभर श्रद्धा की दृष्टि से अच्छा क्षेत्र है। यहां से वाव पथक की शुरुआत हो जाती है। जिस क्षेत्र के साधु-साध्वी हो जाते हैं, उस क्षेत्र की अपनी कुछ अलग विशेषता व इतिहास बन जाता है। जो धर्म के प्रति समर्पित हो जाता है, उसका जीवन संवर जाता है। वाव पथक का इतिहास समर्पण और श्रद्धा का इतिहास है।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के जीवन में मनोबल व श्रद्धा का महत्त्व होता है। मनोबल और श्रद्धा में शक्ति भी होती है। जहां मनोबल दुर्बल होता है, वहां साधारण कार्य भी संभव नहीं हो पाता। मनोबल यदि उत्कृष्ट, प्रकृष्ट व सबल होता है तो वहां व्यक्ति प्रसन्नमना अपना कार्य संपादित कर लेता है। जिसका संकल्पबल मजबूत है, उसके लिए दुष्कर कार्य भी सुकर बन जाता है। संकल्प का बल सम्यक् कार्य के प्रति हो। व्यक्ति किसी को आदर्श मानकर चले। आदर्श सिद्धान्तपरक और व्यक्तिपरक दोनों होता है। व्यक्ति समीचीन सिद्धान्त व अवधारणा के प्रति समर्पित हो। जैसे क्षमा को जिसने अपना आदर्श माना है, वह 'मुझे क्षमा की साधना करनी है' इस सिद्धान्त को आदर्श मानकर चले। किसी महापुरुष को आदर्श बनाकर चलना व्यक्तिपरक आदर्श है। मैं उस अमुक महापुरुष जैसा जीवन जीऊं, उसकी शिक्षा का अनुसरण करूं, यह चिंतन होना चाहिए। हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे। हमारे मन में विशेष काम करने का लक्ष्य होना चाहिए। सम्यक्

कार्य के निष्पादन हेतु व्यक्ति या सिद्धान्त को आदर्श के रूप में चुनना चाहिए। आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।'

भाभर आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम भाभर आए हैं। पहले परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ यहां आए थे। वाव से यहां आए थे, फिर अहमदाबाद की ओर विहार किया था। अब भाभर से वाव जाना है। भाभर प्रवेश के समय हम मुनि गिरीशकुमारजी के संसारपक्षीय घर पर गए। वहां कुछ देर रुके। मुनि गिरीशजी अभी जैन विश्वभारती, लाडनूं में हैं। वे रंगीले, प्रसन्न व विनोदी स्वभाव के संत हैं। संभवतः उनमें गुस्सा कम ही देखा। पहले समण गुरुप्रज्ञ बने, बाद में मुनि गिरीश बने। वे खूब प्रसन्न रहें और संघ की जितनी हो सके, सेवा करते रहें। हम मनसुखभाई के घर पर भी गए। वे थोड़े अस्वस्थ से थे। उनसे वस्त्रदान स्वीकार किया। कुछ अन्य घरों में भी गए। मनसुखभाई मेहता (भुज) की बहन के घर भी हम गए। सबमें धर्म की भावना वृद्धिंगत होती रहे।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मध्याह्न में तेरापंथी परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान में यहां दो श्रद्धालु घर खुले हैं। मूर्तिपूजक समाज के लगभग पचास घर खुले हैं। यहां के दो मूल परिवार हैं--मोदी और परिख। मोदी परिवार के नौ व परिख परिवार के छह घर मुख्यतः सूरत में रहते हैं। सभी परिवारों के प्रायः सदस्य गुरु दर्शनार्थ अपनी जन्मभूमि भाभर पहुंच गए। पूरे गांव में उत्साहपूर्ण वातावरण बना रहा।

आत्माभिमुखी रहें

८ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः भाभर से १३.०७ किमी. का विहार कर एटा पधारे। यहां आपका प्रवास प्राथमिक शाला में रहा। भाभर निवासी मोदी परिवार अपनी पैतृक भूमि में पूज्यप्रवर का स्वागत कर हर्षविभोर था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्रीमती अल्काबेन, रमीलाबेन मोदी, विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री हिम्मतभाई महाराज एवं गांव की ओर से श्री अमृतभाई महाराज ने आचार्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधक को अपने आध्यात्मिक प्राप्तव्य, गंतव्य की ओर अभिमुख रहना चाहिए। गृहस्थ के लिए सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोण हो सकते हैं, किन्तु साधु को आत्माभिमुखी रहना चाहिए। उसके लिए पदार्थ गौण होता है। आत्मा के पापकर्म न लग जाए, इसका ध्यान रखना आत्माभिमुखता है। साधु का यह लक्ष्य रहे कि मेरी किसी भी क्रिया से पापकर्म का बंध न हो। साधना का जीवन मिलना बड़ी बात होती है। जिसे साधनामय जीवन प्राप्त होता है, वह अपने आप में धन्य बन जाता है। बालावस्था अथवा तरुणावस्था में दीक्षित होकर जीवन भर उज्ज्वल साधुत्व का पालन करना बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। साधु का सतत चिन्तन रहना चाहिए--समणोऽहं-समणोऽहं। ध्यान व जप करना साधना है तो मेरा चिंतन है हर क्रिया में समत्व का अभ्यास रहे तो चलना, बोलना, लिखना आदि भी साधना हो सकती है। आत्मसाधना के लिए अनिवार्य साधन है--राग-द्वेष विमुक्ति का अभ्यास। जो व्यक्ति समत्व का अभ्यास कर लेता है, वह आत्माभिमुख रह सकता है। आत्माभिमुखी व्यक्ति मोक्ष की ओर गति कर सकता है।'

पूज्यवर के प्रवचन के उपरान्त साध्वीवृन्द ने आचार्यवर द्वारा टापरा मर्यादा महोत्सव के अवसर पर रचित गीत का संगान किया। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को पावन संबोध प्रदान किया। साधु-साध्वीवृन्द ने खड़े होकर लेखपत्र का समुच्चारण किया। आचार्यप्रवर ने बालमुनियों

को वात्सल्यपूरित वाणी में पावन प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में आचार्यवर ने गत ५ मई को देशनोक में दिवंगत साध्वी राजकुमारीजी 'प्रथम' (नोहर) के विषय में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए उनकी स्मृति में चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया। पूज्यप्रवर ने इस अवसर पर एटा से संबद्ध स्व. मासुखभाई मोदी का भी उल्लेख किया।

माडका में पावन पदार्पण

६ मई। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः एटा से माडका के लिए विहार किया। मार्गवर्ती वासरडा के ग्रामीणों को आचार्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। आचार्यवर मार्गवर्ती परिख मोंघीबेन चंदूलाल संस्कार विद्यालय तीर्थगाम में भी पधारे। वहां आयोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यवर ने विद्यार्थियों में बौद्धिक विकास के साथ नैतिक और भावनात्मक विकास हेतु प्रेरणा प्रदान की। संस्थान के उपाध्यक्ष श्री ईश्वरभाई ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए विद्यालय के विषय में अवगति दी। माडका पहुंचने से पूर्व वहां के अनेक ग्रामीण घड़ों में छाछ लेकर सामने आए और पूज्यवर से छाछ लेने का अनुरोध किया। उन्हें साधुचर्या की जानकारी दी गई।

लगभग १५.०२ किमी. का विहार कर आचार्यवर माडका पधारे। पूज्यवर के पदार्पण से माडका के श्रद्धालुओं का उत्साह चरम पर था। चिलचिलाती धूप में मानों उनका जोश प्रखर बनता जा रहा था। स्वागत जुलूस के मध्य माडका ग्राम पंचायत समिति द्वारा पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर 'अहिंसा मार्ग' का लोकार्पण हुआ। माडका में आचार्यप्रवर का प्रवास तेरापंथ भवन में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री हंसमुखभाई परिख, माडका प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री चंदूभाई परिख, एफ.एस.मेहता अणुव्रत प्रगति विद्यालय की ओर से श्री भगवानभाई व्यास, श्री गणेशदास गढ़वी, जैन समाज की ओर से श्री नटवरभाई मेहता, वाव प्रवास व्यवस्था समिति के सहसंयोजक श्री प्रवीणभाई मेहता ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। सूरत के पूर्व शिक्षाधिकारी श्री प्रभुदान गढ़वी ने अपनी जन्मभूमि में पूज्यचरण का स्वागत किया। बनासकांठा जिला भाजपा के महामंत्री श्री गुमानसिंहजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि अभिजितकुमारजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी एवं समणी अमितप्रज्ञाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री विशाल परिख ने माडका की साध्वी सिद्धान्तश्रीजी द्वारा प्रेषित भावनाओं का वाचन किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दो मार्ग हमारे सामने हैं--एक मोक्ष का मार्ग और दूसरा संसार का मार्ग। एक संन्यास का मार्ग और दूसरा गृहवास का मार्ग। दुनिया में कोई-कोई मनुष्य ऐसे होते हैं, जो संन्यास स्वीकार करते हैं, गृहत्यागी बनकर मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ते हैं। किन्तु जो गृहत्याग न कर सके, ऐसी स्थिति में दूसरा उपाय है--अणुव्रत। गार्हस्थ्य में रहते हुए भी व्यक्ति आंशिक रूप में संयम को स्वीकार कर सकता है। अणुव्रत मध्यम मार्ग है। अणुव्रत का अर्थ है--छोटे-छोटे संकल्प। इसे स्वीकार करके भी मोक्ष की ओर कुछ अंशों में आगे बढ़ा जा सकता है। यह जीवन तो स्वल्पकालिक है, आगे अनंतकाल है। व्यक्ति केवल वर्तमान को ही न देखे, उसे भविष्य के बारे में भी चिंतन करना चाहिए। नास्तिक के लिए भी अणुव्रत लाभदायी बन सकता है। अणुव्रत की साधना करने वाला व्यक्ति मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'यदि दुनिया में धोखा न हो तो दुनिया बहुत अच्छी बन सकती है। ईमानदारी के प्रति सघन आस्था हो तो अनेकानेक समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। ईमानदारी के लिए सरलता

और सचाई के प्रति निष्ठा आवश्यक होती है। आगम में सत्य को भगवान कहा गया है। अध्यात्म जगत का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है--सत्य। साधु के लिए पूर्णतया सत्य की साधना वांछनीय होती है। गृहस्थ के लिए पूर्णतया सत्य की साधना कठिन होती है, किन्तु उसे बहुलांश में सत्य की साधना करनी चाहिए।'

माडका आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम माडका आए हैं। यहां आकर शिष्या साध्वी सिद्धान्तश्री को याद कर रहा हूं। वह छोटी साध्वी है और कुछ वर्षों से बहिर्विहार में है। वह खूब अच्छा विकास करती रहे। मुझे बताया गया यहां वर्तमान में एक परिवार निवास करता है, शेष सब बाहर प्रवास करने लग गए। जहां भी रहें, सबमें धार्मिक जागरणा बनी रहे।' पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश साध्वी सिद्धान्तश्रीजी के संसारपक्षीय दादा श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.भीखाभाई परिख का उल्लेख भी किया।

माडका में निवास करने वाले एक तेरापंथी परिवार तथा ३३ प्रवासी तेरापंथी परिवारों के प्रायः सभी सदस्य (लगभग १५० व्यक्ति) आचार्यवर के एकदिवसीय प्रवास हेतु अपने गांव में पहुंचे और अपने घर खोल कर आराध्य की उपासना का लाभ लिया। परिख जाति के इन सभी परिवारों के सदस्यों को मध्याह्न में आचार्यवर की निकट सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। माडका का एक मूर्तिपूजक परिवार भी पूज्यवर की उपासना से लाभान्वित हुआ।

वाव में भव्य पावन प्रवेश

१० मई। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने आज वाव की ओर प्रस्थान करने से पूर्व माडका के श्रद्धालुओं के घरों में चरणस्पर्श किए। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर सभी हर्षविभोर थे। वाव की ओर विहार करते हुए पूज्यप्रवर माडका के मार्गवर्ती एफ.एस.मेहता अणुव्रत प्रगति विद्यालय में पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान हुए। मार्ग से दो किमी. भीतर स्थित चांदरवा गांव के ग्रामीणों ने भी विहार के दौरान आचार्यवर के दर्शन कर पावन संबोध प्राप्त किया। ग्रामीणों ने कहा--'हमें इसी मार्ग पर गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आज आपके भी दर्शन कर हम सब धन्य हो गए।'

पूज्य आचार्यप्रवर वाव की अनाज मंडी के चेयरमैन रूपसीभाई के अनुरोध पर अनाजमंडी परिसर में पधारे। इसी परिसर में अक्षय तृतीया के अवसर पर बाहर से आने वाले यात्रियों के लिए व्यापक स्तर पर व्यवस्थाएं की गई हैं। आचार्यवर ने कार्यकर्ताओं की प्रार्थना पर कार्यालय, भोजनालय, कुटीर एवं वातानुकूलित विश्रामगृह का भी अवलोकन किया।

अक्षय तृतीया के आयोजन के साथ पंचदिवसीय प्रवास हेतु पूज्यप्रवर के वाव पदार्पण से श्रद्धालुओं के हृदय में प्रसन्नता का सैलाब उमड़ रहा था। आबालवृद्ध पलक पांवड़े बिछाकर अपने यशस्वी आचार्य का स्वागत करने के लिए समुत्सुक था। युवकों और महिलाओं का जोश देखते ही बन रहा था तो वयःप्राप्त लोगों में युवकों का-सा उत्साह दृष्टिगोचर हो रहा था। चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण था।

भव्य स्वागत जुलूस के साथ राजपूत समाज, ब्राह्मण समाज, मुस्लिम समाज, मोची समाज, ठक्कर समाज, नाई समाज, कांग्रेस कारोबारी समाज, चिकित्सक एसोसियेशन, बारोज समाज एवं सोनी समाज आदि विभिन्न वर्गों के द्वारा आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया। सरपंच श्री करसनभाई, वाव तहसील प्रमुख श्री धनजीभाई गोहिल आदि गांव के गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्यवर की भावपूर्ण अगवानी की। जुलूस में विविध झांकियों द्वारा वाव से संबद्ध तेरापंथ इतिहास को भी प्रस्तुति दी गई थी। झांकियां इस प्रकार थीं--अक्षय तृतीया, वाव में तेरापंथ का बीजारोपण गुलाबचन्दजी पारख द्वारा, उजमचन्दभाई संघवी को देवी का चमत्कार, चुनीभाई मेहता को गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त आशीर्वचन, आचार्य महाश्रमण

द्वारा वाव पदार्पण की घोषणा, उजमभाई मेहता की संघीय सूझबूझ, वाव के राणा हरिसिंहजी द्वारा श्रीडूंगरगढ़ में गुरुदेव के दर्शन।

मेहता एन.एस. विनय मन्दिर से प्रारंभ हुआ भव्य स्वागत जुलूस रेफरल हास्पिटल, भारतीय स्टेट बैंक, बस स्टैण्ड, महाराणा प्रताप चौक, मंडी बाजार होते हुए तेरापंथ भवन पहुंचा। आचार्यवर का इस भवन में द्विदिवसीय प्रवास रहा। आज का विहार ८.०८ किमी. का रहा।

स्वागत कार्यक्रम से पूर्व वाव के राणा गजेन्द्रसिंहजी ने पूज्यवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया। मेहता एन.एस.विनय मन्दिर में निर्मित विशाल ऋषभ समवसरण में आयोजित स्वागत समारोह में वाव के युवकों और महिलाओं ने सामूहिक रूप से स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री रसिकभाई मेहता, श्री नटवरभाई मेहता, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री चंपकभाई मेहता, महामंत्री श्री प्रवीणभाई मेहता, परामर्शक भी बागजीभाई मेहता, श्री हंसमुखभाई संघवी, श्री अशोकभाई संघवी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित गुजरात के पूर्व गृहमंत्री श्री प्रफुल्लभाई पटेल, वाव के पूर्व सरपंच श्री हरिसिंहभाई बेंजिया, वाव तहसील कांग्रेस प्रमुख श्री सुरेशभाई शंकरलाल त्रिवेदी, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी के पूर्व वाइस चांसलर श्री बी.ए.प्रजापति, वाव जैन मूर्तिपूजक संघ के प्रमुख श्रावक श्री महेन्द्रभाई परिख ने आचार्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी।

वाव से संबद्ध मुनि अक्षयप्रकाशजी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी, समणी अमितप्रज्ञाजी एवं मुमुक्षु खुशबू ने अपने आराध्य का आस्थासिक्त स्वागत किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'वाव परमपूज्य जयाचार्य के समय से तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़ा क्षेत्र है। यहां आचार्यों का पांचवीं बार पदार्पण हुआ है। वाव आचार्यों का कृपापात्र क्षेत्र रहा है। यहां के अनेक कार्यकर्ता राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। सभी लोग परमपूज्य आचार्यप्रवर के इस प्रवास का पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करें।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के निर्धारित विषय 'अच्छा व्यक्ति और अच्छा समाज' को विवेचित करते हुए अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के मन में मंगल के प्रति आकर्षण रहता है। धर्म को उत्कृष्ट मंगल कहा गया है। धर्म नए कर्मों को आत्मा से बद्ध नहीं होने देता और पूर्व कर्मों का नाश करता है। इसलिए वह उत्कृष्ट मंगल है। धर्म के तीन आयाम हैं--अहिंसा, संयम और तप। जिस व्यक्ति के जीवन में ये तीनों आ जाते हैं, वह अच्छा व्यक्ति है और जिस समाज में इनका समावेश हो जाता है, वह अच्छा समाज कहा जा सकता है। अच्छा व्यक्ति और अच्छा समाज एक सुन्दर मिशन बन सकता है। यदि जीवन में अहिंसा की साधना का अभ्यास हो, इन्द्रिय, वाणी और भोजन आदि का संयम हो तथा शुभयोग रहे तो व्यक्ति अच्छा बन सकता है। जिस समाज के व्यक्ति अच्छे हैं, वह समाज स्वतः अच्छा बन जाता है। जो पंथ और ग्रंथ से ऊपर सचाई को रखता है, उसके प्रति आस्थावान रहता है, वह व्यक्ति और समाज अच्छा है। अच्छे और बुरे का निष्कर्ष व्यक्ति के आचार, विचार और व्यवहार के आधार पर निकाला जा सकता है। धर्म के तीनों आयामों को इसकी कसौटी बनाया जा सकता है। जहां हिंसा, असंयम, ऐशो-आराम का बाहुल्य हो, वह व्यक्ति और समाज अच्छा कैसे कहा जा सकता है? अच्छाइयों के विकास का और बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न हो तो अच्छे व्यक्ति और अच्छे समाज की परिकल्पना साकार हो सकती है।'

आचार्यों का कृपापात्र क्षेत्र वाव

आचार्यप्रवर ने वाव समागमन के संदर्भ में कहा--'आज हम वाव आए हैं। यहां परमपूज्य गुरुदेव

तुलसी का तीन बार पदार्पण हुआ था परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी एक बार पधारे थे, उस समय मैं उनके साथ था। केलवा चतुर्मास के दौरान मैंने टापरा मर्यादा महोत्सव के पश्चात वाव जाने का निर्णय किया था। उसी के अनुसार गुजरात यात्रा के अन्तर्गत आज वाव आया हूं। मुझे सात्त्विक प्रसन्नता और संतोष है कि कुछ वर्षों के अंतराल में ही वाव आ सका। जिस वाव पर हमारे आचार्यों की कृपादृष्टि रही है, जिस वाव का तेरापंथ के इतिहास में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, उस वाव की धरती पर आया हूं। वाव से अनेक साधु-साध्वियां, समणियां धर्मसंघ में दीक्षित हैं। छोटे से क्षेत्र का धर्मसंघ में बड़ा योगदान है। वाव से दीक्षित साधु-साध्वियों और समणियों ने धर्मसंघ की सेवा की है और आज भी अपने ढंग से कर रहे हैं।

यहां के कुछ साधु-साध्वियां दिवंगत हो गए, कुछ हमारे साथ यहां आए हैं और शेष बहिर्विहार में हैं। यहां के मुनि वर्धमानजी स्वामी की मुझे स्मृति हो रही है। मर्यादा महोत्सव के दिनों में वे जब गुरुकुलवास में आते, तब मेरे पास बैठकर बातचीत किया करते थे। मैंने जितना जाना, उनमें शासन के प्रति बड़ा भक्तिभाव था। साध्वी गुणप्रभाजी, साध्वी पुष्पावतीजी और लक्ष्मीकुमारीजी भी यहां से संबद्ध थीं। ये चारों चारित्रात्माएं आज विद्यमान नहीं हैं। उनकी जन्मभूमि वाव में हम उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना कर रहे हैं। मुनि अक्षयप्रकाशजी भी यहां से संबद्ध हैं। हमने इन्हें लाडनूं से बुला लिया। ये प्रतिभाशाली और कार्य करने वाले युवा संत हैं। पहले गुरुदेव महाप्रज्ञजी की परिचर्या में रहा करते थे। इन्होंने अच्छा अध्ययन किया, दीक्षा के बाद एम.बी.ए. किया है। मुनि अभिजितकुमारजी भी हमारे साथ आए हैं। यों तो छोटे संत हैं, गुरुकुलवास में रहने का इन्हें अवसर प्राप्त हो रहा है। मैंने इन्हें प्रतिभाशाली, विनयशील और सुशील संत के रूप में देखा। काफी अच्छे साधु हैं। इनके संसारपक्षीय कजिन मुनि जागृतकुमार नवदीक्षित मुनि है। मुनि लब्धिकुमार छोटा साधु है। अभी शासनश्री मुनिश्री धर्मचन्दजी स्वामी के साथ है।

यहां की साध्वी भाग्यवतीजी जो अभी बीदासर समाधिकेन्द्र में हैं, वाव पथक से उनकी प्रथम दीक्षा हुई। हम उन्हें उनकी भूमि पर याद करते हैं। साध्वी प्रभाश्रीजी भी यहीं की हैं। साध्वी मंजुरेखाजी साध्वी कंचनप्रभाजी के साथ है। साध्वी शशिरेखाजी और साध्वी लाभवतीजी भी यहां से जुड़ी हुई हैं। साध्वी प्रज्ञावतीजी, साध्वी रामकुमारीजी (लाडनूं) के साथ हैं। साध्वी कंचनरेखाजी साध्वी कुंथुश्रीजी के साथ हैं। साध्वी लब्धिश्रीजी को हमने इस बार बीदासर चाकरी का दायित्व सौंपा है। साध्वी सोनांजी के साथ रही हुई है। मुनि अक्षयप्रकाशजी की संसारपक्षीया भुआ है। साध्वी हेमयशाजी उनकी संसारपक्षीया बहन है, जो उनके साथ ही है। साध्वी आराधनाश्रीजी मुनि अक्षयप्रकाशजी की संसारपक्षीया बहन है। इस प्रकार ये एक परिवार से चार व्यक्ति दीक्षित हैं। साध्वी ऋजुप्रज्ञाजी भी यहीं की है। साध्वी योगक्षेमप्रभाजी साध्वी निर्वाणश्रीजी के साथ है। साध्वी निर्भयप्रभाजी साध्वी कंचनप्रभाजी के साथ है, जो समणी निर्मलप्रज्ञाजी की संसारपक्षीया बड़ी बहन है। साध्वी अनेकान्तप्रभा छोटी साध्वी है, जो अभी साध्वी जसवतीजी के साथ है। साध्वी चेलनाश्री भी यहीं की हैं।

समणी निर्मलप्रज्ञाजी को कई वर्षों से गुरुकुलवास में रहने का अवसर मिल रहा है। गुरुकुलवास में ये अपने ढंग से काम करती हैं। समणी अमितप्रज्ञाजी अब श्रेणी आरोहण की ओर बढ़ रही है। सभी साधु-साध्वियां और समणियां खूब अच्छा विकास, अच्छी साधना और अच्छा कार्य करें। यहां की मुमुक्षु खुशबू भी खूब अच्छा विकास और खूब अच्छी साधना करे।

वाव के श्रावकों का भी अपना इतिहास है। गुरुदेव तुलसी ने तो अपने गीतों में वाव के श्रावकों का उल्लेख कर दिया--'मेहता वाववाला ऊमजी रो आंकल्यो आचार','राणाजी आया वाव स्यूं चलाई, है

साथ में दलाल चुन्नीभाई।' वाव के श्रावकों ने विवेक और संघभक्ति का परिचय दिया। आज भी वाव के अनेक कार्यकर्ता अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उनमें अच्छा विवेक है, बुद्धि है, क्षमता है। वे संघ के लिए सोचते हैं, काम करते हैं, सेवा देते हैं। वाव के श्रावकों में विनयभाव, श्रद्धाभाव, भक्तिभाव देखने को मिला। नई पीढ़ी के युवकों को जितना मैंने देखा, उनमें भी विनय का भाव और समर्पण का भाव है। यहां के लोगों में अपने से बड़ों के प्रति सम्मान की भावना देखने को मिली। यहां के अनेक श्रावक-श्राविकाओं को आचार्यों के द्वारा संबोधन प्राप्त हुआ है। ज्ञात हुआ कि चौदह श्रावक-श्राविकाएं संथारा स्वीकार कर आत्मकल्याण के लिए आगे बढ़े हैं। यहां की ज्ञानशाला का अच्छा क्रम ज्ञात हुआ है। अशोकभाई संघवी ज्ञानशाला से जुड़े रहे हैं। इस प्रकार वाव हमारे धर्मसंघ का अच्छा क्षेत्र है। यहां के श्रावक-श्राविकाएं खूब अच्छा आध्यात्मिक विकास करें, शुभाशंसा।'

आज मध्याह्न में वाव के राजपरिवार से संबद्ध श्री ध्रुवसिंहजी और प्रह्लादसिंहजी ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन संबोध प्राप्त किया।

११ मई। वाव प्रवास का दूसरा दिन। परमपूज्य आचार्यवर ने प्रातः श्रद्धालुओं के घरों में चरणस्पर्श का क्रम प्रारंभ किया। इस क्रम के दौरान पूज्यवर प्रत्येक घर में कुछ क्षण विराजमान भी हुए। श्रद्धालु भक्त आचार्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर अतिशय आह्लादित थे।

ऋषभ समवसरण में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में कन्यामंडल ने गीत का संगान किया। वाव निवासी मुम्बई प्रवासी महिलाओं ने भी गीत को प्रस्तुति दी। श्री हिम्मतभाई ने भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी प्रज्ञावतीजी, साध्वी लब्धिश्रीजी और साध्वी प्रभाश्रीजी द्वारा प्रेषित भावनाओं का क्रमशः मुनि अभिजित कुमारजी, श्री भरतभाई मोदी और राजेश मेहता ने वाचन किया। कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित श्री मुसाफिरभाई पालनपुरी ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'मूल्य धर्म और सम्प्रदाय का' विषय को विवेचित करते हुए कहा--'धर्म शब्द सम्प्रदाय के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है, किन्तु जहां धर्म और सम्प्रदाय दोनों शब्दों का प्रयोग किया जाता है तो दोनों का अर्थ भिन्न-भिन्न हो जाता है। धर्म और सम्प्रदाय का अपना-अपना मूल्य है। धर्म की साधना आत्मकल्याण के लिए और परम सुख की प्राप्ति के लिए की जाती है। सम्प्रदाय धर्म की साधना में सहायक साधन होता है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए अनिवार्य साधन है--सम्यक्‌ज्ञान, सम्यक्‌दर्शन और सम्यक्‌ चारित्र की साधना। सम्प्रदाय रत्नत्रयी की साधना में सहायक बन सकता है। अकेले व्यक्ति द्वारा साधना करना कठिन होता है, इसलिए समूहबद्ध साधना की जाती है। मेरा मानना है कि सम्प्रदाय कोई बुरी चीज नहीं होती। वह तो साधना में सहयोगी बन सकता है। जिस सम्प्रदाय में साम्प्रदायिकता इतनी ज्यादा हो कि धर्म गौण हो जाए और हिंसा आदि का सहारा लिया जाए, वहां कठिनाई हो सकती है। सम्प्रदाय के लोगों में साम्प्रदायिक उन्माद नहीं रहना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'धर्म और सम्प्रदाय में धर्म का महत्त्व अधिक है। सत्य धर्म है। मेरा स्पष्ट मंतव्य है कि सत्य और सम्प्रदाय में किसी एक का चयन करना हो तो सत्य को स्वीकार करना चाहिए, भले उसके लिए सम्प्रदाय को छोड़ना क्यों न पड़े। सम्प्रदाय के प्रति ऐसा लगाव नहीं होना चाहिए कि वह सत्य से दूर कर दे। सम्प्रदाय लिफाफा, छिलका और शरीर की भांति है, जबकि धर्म पत्र, फल और आत्मा की भांति होता है। धर्म का मूल्य बहुत है तो सम्प्रदाय का भी अपना महत्त्व होता है। जिस सम्प्रदाय को तटस्थ भाव से मानकर स्वीकार किया, उसके सदस्यों को उसका सम्मान करना चाहिए। अपने संगठन की मर्यादा, व्यवस्था के प्रति निष्ठा का भाव रहना चाहिए। छोटी-मोटी तुच्छ बातों को लेकर उसे छोड़ने की भूल नहीं करनी चाहिए। सम्प्रदाय का सम्मान करना उसके सदस्यों का कर्त्तव्य

है। सम्प्रदाय साधना में बहुत सहायक बनता है। वहां व्यक्ति को ज्ञान और चारित्र के विकास का अच्छा अवसर मिलता है।'

प्रस्फुटित हो भीतर का सौन्दर्य

१२ मई। प्रातः तेरापंथ भवन से आचार्यवर चार रास्ता स्थित मेहता नागरदास शामजीभाई विनय मंदिर (विद्यालय) के लिए प्रस्थित हुए। मार्ग में भगवान ऋषभ व उनके जीवन से संबंधित चयनित प्रसंगों की झांकियां प्रदर्शित की गई थीं। प्रत्येक झांकी स्थल पर आचार्यवर कुछ क्षण के लिए रुके और उसका अवलोकन किया। झांकियां इस प्रकार थीं--यौगलिक युग, ऋषभ जन्मोत्सव, राज्याभिषेक, राज्य व्यवस्था, दीक्षा महोत्सव, अक्षय तृतीया, कैवल्य महोत्सव, निर्वाण महोत्सव। आचार्यवर का अवशेष त्रिदिवसीय प्रवास यहीं हुआ।

विद्यालय परिसर में निर्मित ऋषभ समवसरण में 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' विषय पर आध्यात्मिक प्रवचन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'इस असार संसार में सार तत्त्व क्या है? इस संदर्भ में अनेक मंतव्य हो सकते हैं। कुछ लोग अर्थार्जन, कुछ लोग ऐशो-आराम, कुछ अर्थ तो कुछ भोग को सारतत्त्व मान सकते हैं। अध्यात्म मनीषियों का अभिमत है कि सत्य सारपूर्ण तत्त्व है। जीवन का सार है सचाई। दुनिया में यथार्थ भाव आज भी जीवित है। कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो यथार्थ की आराधना करने का प्रयास करते हैं। सत्य के अनुपालन में किसी भी प्रकार की कठिनाई उपस्थित हो सकती है। इसके लिए कठिनाई को झेलने की क्षमता होनी चाहिए। कठिनाई आ भी जाए तो चिंता की कोई बात नहीं। वैसे तो कठिनाई सत्य की राह पर चलने वालों को भी आ सकती है तो झूठ बोलने वालों के सामने भी आ सकती है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आचार्य तुलसी विरचित 'पंचसूत्रम' में वर्णित सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा--'जहां सत्य होता है, वहां शिव भी है और जहां शिव है, वहां भीतरी सौन्दर्य प्रस्फुटित होता है। देखने में चेहरा चाहे सुन्दर न हो, पर वहां सत्य व शिव है तो आन्तरिक सौन्दर्य निश्चित रूप से होगा। मैं चेहरों को नजरंदाज नहीं करता। उसका भी महत्त्व होता है, किन्तु व्यक्ति का ज्ञान, व्यवहार व कार्य उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। व्यक्ति अपने भीतर के सौन्दर्य को निखारने का प्रयत्न करे और सद्गुणों को वृद्धिंगत करे।'

रात्रि में ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। बेंगलुरु से समागत सोनल पीपाड़ा व हेतल पीपाड़ा ने अपने सुमधुर गीतों से समां बांधा।

अक्षय तृतीया समारोह

१३ मई। बैशाख शुक्ला तृतीया को अक्षय तृतीया का भव्य समायोजन। समारोह आयोजन समिति के संयोजक श्री चंपकभाई मेहता ने स्वागत भाषण किया। मुनि अक्षयप्रकाशजी ने अपने विचार रखे। आचार्यप्रवर की पुस्तक 'संवाद भगवान से भाग-१' के गुजराती संस्करण का लोकार्पण हुआ। भिक्षु बोधि स्थल, राजसमन्द की स्वर्णजयंती के संदर्भ में प्रकाशित 'बोधि स्वर्णिमा' मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डा. बसंतीलाल बाबेल, श्री सवाईलाल पोखरना, श्री गणेशलाल कच्छारा, बोधि स्थल के मंत्री श्री अशोक डूंगरवाल ने आचार्यवर के करकमलों में उपहृत की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुजरात के आरोग्य एवं परिवहन मंत्री श्री पर्वतभाई पटेल ने कहा--'आचार्य महाप्रज्ञ ग्यारह वर्ष पूर्व वाव-थराद पधारे और अब आचार्य महाश्रमण इस क्षेत्र में पधारे हैं। मैं आचार्य भगवंत का स्वागत करता हूं। आज के इस साइंस व टेक्नॉलोजी के युग में आदमी दिग्मूढ़ है। उसे आपके

द्वारा प्रेरणा मिलती रहे। मैंने यह देखा है और पाया है कि जैन धर्म का प्रभाव सदैव रहा है। आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा व सत्य के पुजारी हैं। आप समाज के नैतिक उत्थान हेतु अहर्निश प्रयत्नशील हैं।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'भगवान ऋषभ इस अवसर्पिणी काल के प्रथम धर्म प्रवर्तक थे। ऋषभ ने राज्य व्यवस्था के दौरान श्रम की महत्ता प्रतिपादित की और तत्कालीन समाज को श्रमजीवी बनाया। उन्होंने उस समय की अपेक्षा के अनुसार प्रशिक्षण दिया। व्यक्ति के जीवन में धर्म का अवतरण हो, यह अपेक्षित है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'भारतीय संस्कृति उत्सवप्रधान रही है। यहां लोग विविध प्रकार के उत्सव मनाते रहते हैं। उनके पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय उत्सव होते हैं। कुछ उत्सवों का संबंध प्रकृति से भी होता है। कोई भी महीना ऐसा नहीं जाता, जब कोई उत्सव न मनाया जाता हो। कुछ कार्यक्रम विशुद्ध धार्मिक होते हैं। अक्षय तृतीया का संबंध भगवान आदिनाथ से है। इसका इतिहास की अनेक घटनाओं व प्रकृति से भी संबंध है।'

जीवनशैली की चर्चा करते हुए महाश्रमणीजी ने कहा--'जीवनशैली आज बहस का विषय बनी हुई है। इस पर व्यापक चर्चाएं, सेमिनार व संगोष्ठियां आयोजित हो रही हैं। जीवनशैली कैसी हो? उत्तर होगा--जीवनशैली पर्सनल, पॉजिटिव, प्रैक्टिकल व टाइम बाउण्ड हो।' वर्षीतप के संदर्भ में साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'तपस्या कर्म निर्जरा का माध्यम है तो स्वास्थ्य का भी आधार है। कई तपस्वी तपस्या करने से पूर्व कितनी दवा लेते थे, पर वर्षीतप प्रारंभ करने के बाद अधिकांशतः या संपूर्णतः वे दवामुक्त हो गए। इस तरह के वर्षीतप के साथ लोग स्वादविजय का वर्षीतप भी करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भगवान ऋषभ के साथ अक्षय तृतीया का संबंध है। ऋषभ तप का पारणा करने हेतु भिक्षा के लिए नगर के द्वार-द्वार पर जाते। इस तरह वे लंबे काल तक घूमते रहे, किन्तु उन्हें अभीप्सित दान न मिला। लोग बहुत कुछ देने का प्रयास करते रहे, किन्तु उन्हें वह न मिलता, जो उन्हें भिक्षा में कल्पनीय था। साधु गोचरी के लिए जाए और वह न मिले तो दुःखी नहीं होना चाहिए। 'तवो त्ति अहियासए'--सहज तपस्या हो गई, यह मानकर क्षुधा परीषह को सहन करना चाहिए। इसका जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया ऋषभ ने। अन्ततः उनकी तेरह मास से भी ऊपर की तपस्या के पारणे का सौभाग्य मिला श्रेयांस को इक्षुरस का दान देकर। उस तपस्या को निमित्त मानकर कितने-कितने लोग वर्षीतप करते हैं, इसका पूरा लेखाजोखा तो मिलना मुश्किल है। मैं उस व्यक्ति को धन्यवाद देना चाहूंगा, जिसने ऋषभ की उस तपस्या का अनुकरण करते हुए या उसको निमित्त मानते हुए वर्षीतप का प्रारंभ किया। अनुकूलता हो और विशेष कष्ट न हो तो व्यक्ति यह तप करता रहे। एक दिन खाना और एक दिन नहीं खाना कितनी अच्छी तपस्या है।' पूज्य आचार्यवर ने वर्षीतप से जुड़े नौ नियमों की जानकारी दी।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'अक्षय तृतीया कितना अर्थपूर्ण दिवस है। आज का दिन सहज मुहूर्त्त है। आज के दिन हमने श्रेणी आरोहण का उपक्रम रख लिया। तप के संदर्भ में मैंने **'शुभयोगस्तपः'** परिभाषा दी है। मैं दूसरी परिभाषा देता हूं--**सम्यक्पराक्रमस्तपः**।' सम्यक् पराक्रम करना भी तप है। सम्यक् पुरुषार्थ से व्यक्ति अक्षय को प्राप्त कर सकता है। क्षायिक सम्यक्त्व, केवलज्ञान, केवलदर्शन व अनंत शक्ति की प्राप्ति अक्षय है। हमारी साधना अक्षय को पाने हेतु हो। ऋषभ ने मानव सभ्यता का शुभारंभ किया, धर्मतीर्थ का प्रवर्तन किया और जनता को असि, मसि और कृषि का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने लौकिक व लोकोत्तर दोनों प्रकार का प्रशिक्षण दिया।' आचार्यवर ने वर्षीतप के तपस्वियों को समीचीन साधना करने के अभ्यास की महत्ता प्रतिपादित करते हुए तपस्या के साथ नियम पालन की प्रेरणा दी।

पूज्यवर ने वर्षीतप करने वाले भाई-बहनों को वर्षीतप की आलोयणा हेतु ५१-५१ सामायिक की आलोयणा प्रदान की, साथ ही अगले वर्ष वर्षीतप करने वालों को संकल्प कराया।

आचार्यवर ने आगे कहा--'तपस्या में चौविहार नवकारसी एक छोटा-सा तप है, पर है बहुत महत्त्वपूर्ण। तप के भण्डार में यह एक छोटा रत्न है। हमारे बालमुनि भी पोरसी आदि तपस्या करते हैं। आचार्यवर ने बालमुनि मृदु, विवेक, रम्य, ध्रुव व सिद्ध का परिचय कराते हुए नवदीक्षित साध्वियों को भी खड़ा किया। आचार्यवर ने बालमुनियों को प्रेरणा देते हुए कहा--'बालमुनि सेवा करें, आगम पढ़ें व सीखें, अपने ज्ञान का विकास करें और खूब आगे बढ़ें। हृदय में प्रसन्नता रहनी चाहिए। नई पौधरूप बालमुनियों का विकास हो। इनकी प्रगति का पथ प्रशस्त रहे।'

सिंघाड़ा व संबोधन

आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'मुनिश्री विजयकुमारजी स्वामी अच्छे संत हैं। हमने दो दिन पूर्व इन्हें **न्यारां के अग्रणी का दर्जा दिया है।** ये साहित्यिक अभिरुचि वाले हैं, मिलनसार हैं। इनमें अकलहशीलता देखी। मेरा विचार है समय पर व्यक्ति का अंकन होना चाहिए।

साध्वी भाग्यवतीजी (वाव) को उनकी जन्मभूमि वाव में **शासनश्री साध्वी भाग्यवतीजी (वाव) के रूप में स्वीकार करता हूं।**

साध्वी इलाकुमारीजी में तपस्या की अच्छी भावना लगी। उन्होंने तपस्या की आराधना भी की है और अभी भी करती रहती हैं। उनके तप के प्रति प्रमोदभाव व्यक्त करता हूं और उन्हें **तपोमूर्ति साध्वी इलाकुमारीजी के रूप में संबोधित करता हूं।'**

वाव प्रवास के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आचार्य महाप्रज्ञ करुणाशील आचार्य थे। उनके सान्निध्य में सन् २००२ में यहां अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित हुआ था। अब हमारे द्वारा उसकी पुनरावृत्ति हो रही है। वाव में निष्ठाशील, क्षमतावान, भावनाशील व चिंतनशील कार्यकर्ता हैं। हम यहां के श्रावकों के घरों में गए, उनके घरों में बैठे। प्रवास व्यवस्था के संयोजक चंपकभाई मेहता के घर भी गए। चंपकभाई के बारे में जानकारी मिली। हमें लगा कि ये महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्षीय दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। हम जिन बाइयों को दीक्षा देते हैं, उनका प्रायः इसी संस्था से आयात होता है। यहां के अन्य कार्यकर्ता भी श्रमशील हैं।'

दीक्षा समारोह

अक्षय तृतीया समारोह के साथ आज एक अन्य महत्त्वपूर्ण उपक्रम जुड़ा था श्रेणी आरोहण का। सत्रह वर्षों से समणी के रूप साधनारत व विदेश यात्रा करने वाली वाव की समणी डॉ. अमितप्रज्ञाजी का परिचय समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने दिया। समणी अमितप्रज्ञाजी ने अपने भावपूर्ण विचार रखे। आचार्यवर ने श्रेणी आरोहण के क्रम में समणीजी को साध्वी दीक्षा प्रदान की और उसके बाद गत जीवन की आलोचना करवाई। साध्वीप्रमुखाजी ने केशलोच किया और रजोहरण प्रदान किया। नामकरण के क्रम में पूज्यप्रवर ने समणी अमितप्रज्ञा को नाम दिया--**साध्वी अक्षयप्रभा।**

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने दीक्षान्त संभाषण में नवदीक्षित को संबोधित कर कहा--'पहले तुम समणी थी, अब साध्वी बन गई हो। तुम्हारी खाने-पीने, बैठने, चलने आदि की प्रत्येक क्रिया संयमपूर्वक व विवेकपूर्ण हो। साध्वीप्रमुखाजी के पास तुम अपनी साधना का विकास करो।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'संवाद भगवान से' का गुजराती संस्करण आया है। आगम आधारित

होने से यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण बन गई है। इसके हिन्दी संस्करण के संपादन का कार्य साध्वी सुमतिप्रभा ने किया है।

भिक्षु बोधिस्थल के साथ आचार्य भिक्षु का नाम सामने आ गया। बोधिस्थल उनके नाम से जुड़ा हुआ स्थान है। उसके स्वर्णजयंती के संदर्भ में 'बोधि स्वर्णिमा' आई है। इससे पाठकों को अच्छी प्रेरणा मिले।'

लगभग १०.४५ बजे वह प्रेरक दौर शुरू हुआ, जिसकी सबको प्रतीक्षा थी। वर्षीतप करने वाले तपस्वी भाई-बहनों ने पंक्तिबद्ध होकर ऋषभ प्रतिनिधि के रूप में पट्ट पर विराजमान अपने हृदय सम्राट आचार्यप्रवर के समक्ष रखे पात्र में इक्षुरस बहराया। श्रद्धासिक्त भावों के साथ सुपात्र दान देकर तपस्वी भाई-बहन अहोभाव की अनुभूति कर रहे थे। आचार्यवर की पावन सन्निधि में मधुर संगायक मुनि राजकुमारजी ने आचार्यवर से इक्षुरस का ग्रास लेकर सत्रहवें वर्षीतप का पारणा किया। यह उनका लगातार वर्षीतप है। कुल १६१ भाई-बहनों ने वर्षीतप का पारणा संपन्न किया। पूरे देश में अपने-अपने क्षेत्रों में प्रवासित साधु-साध्वियों एवं समणीजी की सन्निधि में भी पारणे संपन्न हुए। आभारज्ञापन उपासक श्री अशोकभाई संघवी व कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सम्मान समारोह

रात्रि में आचार्यवर की पावन सन्निधि में तुलसी साधना शिखर का तीसरा 'आचार्य महाश्रमण सेवा सम्मान' मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डा.बसंतीलाल बाबेल को प्रदान किया गया। साधना शिखर के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी डागलिया ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। श्री सवाईलालजी पोखरना ने प्रशस्तिपत्र का वाचन किया। मंत्री श्री गणेश डागलिया ने पुरस्कार के बारे में जानकारी दी। शिखर के पदाधिकारियों ने श्री बाबेल को प्रशस्तिपत्र आदि के साथ इक्यावन हजार रुपये का चैक श्री बाबेल को प्रदान किया। श्री बाबेल ने अपने स्वीकृति भाषण में सम्मान प्राप्ति को इसलिए महत्त्वपूर्ण बताया, क्योंकि इसे अपने लोगों ने प्रदान किया।

पूज्य आचार्यप्रवर ने रात्रिकालीन कार्यक्रम में 'कैसी हो हमारी वाणी व व्यवहार' विषय का विवेचन किया। पूज्यप्रवर ने कहा--'अभी एक योग्य व्यक्ति का सम्मान किया गया, ऐसा लगता है। हमने मेवाड़ यात्रा की, उस समय डा.बाबेल को सेवा व सम्पर्क का अवसर मिला। मेवाड़ संबंधी कोई बात आती है तो हम बहुधा बाबेल साहब से मिलने को कह देते हैं। उस संदर्भ में इनके संवाद मिलते रहते हैं। इन्होंने कितनी पुस्तकें लिखी हैं। परम श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञजी के मन में बाबेलजी के प्रति प्रशस्य स्थान था।' एक अच्छे व्यक्ति का सम्मान होने से सम्मान स्वयं सम्मानित हो जाता है। मेवाड़ के अनेक कार्यकर्ता दायित्व निभाने वाले हैं। वे संघसेवा हेतु तत्पर रहते हैं। कार्यक्रम का संचालन ट्रस्टी श्री अरुण कोठारी ने किया।

साध्वी राजकुमारीजी 'प्रथम' (नोहर) कालधर्म को संप्राप्त

साध्वी राजकुमारीजी 'प्रथम' (नोहर) ५ मई को देशनोक में कालधर्म को संप्राप्त हो गईं। उनके संदर्भ में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'साध्वी राजकुमारीजी 'प्रथम' संसारपक्ष में नोहर के तातेड़ परिवार से संबद्ध थीं। परमपूज्य गुरुदेव कालूगणी के पावन मुखारविन्द को देखकर उनके मन में दीक्षा लेने की भावना जगी। लगभग चौदह वर्ष की अविवाहित अवस्था में वि.सं.१९९० में महामना पूज्य कालूगणी के मुखकमल से दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा के पश्चात वे परमपूज्य माणकगणी

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 18-05-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

द्वारा दीक्षित साध्वी मधुजी के सिंघाड़े में रहीं, तदुपरान्त साध्वी छोटांजी के साथ भी रहीं। उनके दिवंगत होने के पश्चात वि.सं.२०३२ में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया। वि.सं.२०६८ में आमेट मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मैंने उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया। अस्वास्थ्य की स्थिति में उन्होंने तिविहार संलेखना प्रारंभ की और तिविहार तपस्या के पांचवें दिन अर्थात वि.सं. २०७०, बैशाख कृष्णा एकादशी को मध्याह्न में लगभग १२.०९ बजे उन्हें तिविहार और लगभग २.०६ बजे चौविहार अनशन का प्रत्याख्यान करवाया गया। उसी दिन लगभग ३.५० बजे वे कालधर्म को संप्राप्त हो गईं। उनकी आत्मा शीघ्र मोक्षश्री का वरण करे। सहवर्ती साध्वियों को उनके पास रहने और उनकी सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। सहवर्ती साध्वियां खूब अच्छा विकास करें।'

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व.गुलाबचन्दजी श्यामसुखा (सुपुत्र-स्व.हजारीमलजी श्यामसुखा, श्रीडूंगरगढ़) की पुण्यस्मृति में उनके भ्राता श्री बुधमल, हनुमानमल, भूरामल, सुपुत्र बजरंग, प्रकाश, रतन श्यामसुखा, श्रीडूंगरगढ़-इन्दोर-कोलकाता-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्रीमती लाडांदेवी बैद की प्रथम पुण्यतिथि व पूज्यप्रवर द्वारा उन्हें 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र माणकचन्द, शुभकरण, सुपौत्र अरविन्द, सुदर्शन, पंकज, विक्रम बैद, गंगाशहर-जलगांव-सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री पारसमलजी हरकचन्दजी बाफणा (दौलतगढ़-बारडोली) के तृतीय वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र गजेन्द्रकुमार, सुशीलकुमार, सुपौत्र रिद्धिम, दर्शित बाफणा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती कान्ताबेन सिरेमलजी दोशी (मंडार-धुलिया-मुम्बई) के १७वें वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू संदीप-प्रतीक्षा, सुधीर-निशा, समीर-राजश्री, सुपौत्र विशेष, सुपौत्री आस्था, हीया, दीया दोशी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- महातपस्वी शान्तिदूत आचार्यश्री महाश्रमण के माडका में पावन पदार्पण के उपलक्ष्य में श्री त्रिभुवनदास जेठाभाई परीख परिवार की ओर से उनके सुपुत्र बाबूलाल, चन्दूलाल, सुपौत्र भावेश, राजेश, पारस परीख द्वारा प्रदत्त।

विज्ञप्ति के जिन सदस्यों का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपनी वार्षिक सदस्यता का नवीनीकरण शीघ्र करवा लें। वार्षिक शुल्क २५०/- अथवा पन्द्रह वर्ष के लिए शुल्क २१००/- हमारे शिविर कार्यालय अथवा दिल्ली कार्यालय में जमा कराएं। शुल्क आदर्श साहित्य संघ के एकाउंट नं.०१३३०००१००३६८३५९ (पंजाब नेशनल बैंक) में भी जमा करा सकते हैं।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री मर्यादाकुमार कोठारी, 'ज्ञानम्' फर्स्ट फ्लोर, मंगल टावर, बिश्नोई धर्मशाला के सामने, रातानाडा, जोधपुर- ३४२००१ (राज.)
मोबाइल नं. ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**